

पद ६८

(राग: जोगिया मांड - ताल: दीपचंदी)

जो कोई आपको भूल गया । सो क्या खुदा जाने ॥१॥ जिसकु
इश्क आब शराब नदिन पासाकी । जानो उस भेदसेहि राह रह
गया की ॥२॥ माणिकके दर का खाक बरदार कहे है भाई । ये
जिसने पाया सोहि समझे और न जाने कोई ॥३॥